□□□□□□□□□□ □□□□□□□

जनसत्ता 4 सितंबर, 2014: प्रियवर नरेंद्र मोदीजी नमस्कार, जापान के □कवशि्ववद्यिालय में नयिुक्त हो यहां आ□

मुझे पचास बरस होते हैं□ वहां से अवकाश पाकर मैं पछिले पचीस वर्ष से क्योतो जलि केइस ठेठ पहा□ी गांव में नविसति हूं□ मेरी कशिोरावस्था बीती अब से तीन चौथाई शतक, पचहत्तर साल पहले केबनारस में□ आपके क्योतो आगमन का पता चलते ही ऐसा लगा जैसे अपने घर का प्राणी मेरे यहां आ रहा है□

जापान में पदार्पण कयिा आपने तोक्यो या हरिोशमिा में नहीं बल्कि क्योतो में! क्योतो में कोई ब□ा उद्योग-धंधा नहीं, ब□ कल-कारखाने नहीं, नदयिों केकनिारे चार मंजलि या इससे अधकिऊंची इमारत नहीं, वज्ञिापन केब□ साइन बोर्ड तकनहीं! है तो, मंदरि, शतिो समाधि, मंदरि, और मंदरि! और है यहां रसी-बसी जापान की पुरानी संस्कृति- जो क्योतो की बोली तकमें अनूठी मठिास भर कर उसकी अलग पहचान बनाती है! इस गांव में □कही दूकान है, बसिाती की□ दूकान में ग्राहक केघुसते ही गल्ले केपीछे ख□ी महलिा का स्वागत वचन 'ओइदे यासु!' कानों में प□ते ही मालूम हो जाता है, यह क्योतो की कन्या है! क्योंकि पूरे जापान में केवल क्योतो में यह बोली बोली जाती है!

आपके द्वारा क्योतो का चुनाव करते ही प्रगट हो गया, आप कसि मन से क्योतो पहले आ□ हैं□ वैसे ही गुजरात और दल्लिी को छो□, वाराणसी का चुनाव करने से भी आपका इरादा स्पष्ट हो जाता है!

अब से ढाई हजार साल पहले □कभक्षिु बोधविृक्ष से पाटलपुत्र नहीं, वाराणसी चल कर गया था, धर्म प्रवर्तन करने केलि□! वरुणा नदी पार करने के लि□ उसकेपास देने को द्रव्य न था! गेरुआ वस्त्र पहने देख केवट ने उन्हें मुफ्त में पार पहुंचा दयिा! उस दनि से आज दनि तककाशी केमल्लाह गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासयिों से कराया नहीं लेते!

लगभग इसी समय दूर शलातुर (अब पेशावर केपास चार सड्डा) से चल कर पूरा मध्य प्रदेश पार कर, □कयुवक 3959 पंक्तयिों की पोथी बगल में दबा□ हु□ पाटलपुत्र की शास्त्रकार सभा केआगे उसे प्रस्तुत करने पहुंचा था□ सारे □क्तरति वद्विानों ने इस 'अष्टाध्यायी' को सरि झुका कर स्वीकार कयिा□ वशि्व केइस प्रथम व्याकरण में ढाल कर हमारी भाषा 'संस्कृत' कहलाई□ लेकनि काशी केपंडतिों ने इसमें भी संशोधनों का पख लगा दयिा- इन संशोधनों को 'काशकि' कहते हैं और इनकेबनिा संस्कृत व्याकरण का ज्ञान अधूरा रह जाता है!

गोस्वामी तुलसीदास ने सन् 1631 में 'रामचरितमानस' लखिना शुरू कयि था, अयोध्या में! उसे अधूरा लेकर वे चले आ□ थे, वाराणसी□ 'असी गंग के तीर' □ कबनारसी बजरे में रहते हु□ उन्होंने ग्रंथ पूरा कयि था और उसे बाबा वशि्वनाथ को समर्पति कयि!

बादशाह औरंग□ब के कनों में यह खबर पहुंचाई गई कि बनारस के ब्राह्मण अपनी पाठशालाओं में अपनी कतिाबें प□ाते है और उनमें दूर-दूर से वद्यिार्थी और जज्ञिासु आते है□ ये पाठशाला□ं गंगा कनिारे-कनिारे फैली थीं□ बादशाह के हुक्म से 2 सतिंबर 1669 को ये सारी पाठशाला□ं गरिा दी गर्इं- इसी झपेटे में वशि्वनाथ मंदरि भी ढहा दयिा गया□

पंडति मदन मोहन मालवीय का स्वप्न था, □ कवशि्वविद्यालय की स्थापना□ इसके लि□ आवश्यक भूमि, जतिनी भी वे चाहते, उन्हें बीकानेर में महाराज गंगा सहि से मलि सकती थी□ वैसे ही मनोवांछति भूमि उन्हें मथिलिा में दरभंगा नरेश रामेश्वर सहि से भी मलि सकती थी मगर उन्होंने गांव मांगे महाराज बनारस से- दक्षणिा के रूप में!

ऊपर मैंने जतिने भी दृष्टांत दि□, सब में □ कही तत्त्व समान है- 'शब्द'! काशी ही वह पवत्रि स्थान है, जहां शब्द हो जाता है शास्त्र ही नहीं शस्त्र भी! गौतम बुद्ध के शब्द हमिालय की दुर्लंघ्य पर्वत श्रेणयिों को लांघ, अगम्य गोबी का रेगस्तिान भी पार कर चीन, कोरयिा और जापान तक व्याप्त हु□ □

जापान में □न, 'धम्म', जापानी वर्णमाला तक □ कभारतीय भारद्वाज गोत्रीय, केरल नविासी भक्षिु, बोधसिेन की देन है! जापान में हजार-डे□ हजार साल पुरानी समाधयिों के सरिहाने लगे पंच तत्त्व के प्रतीक पांच पत्थरों पर नागरी लपि के पांच अक्षर उके□ हु□ मलिते है!

'स्मार्ट' कहने में मुखसुख मलिता हो तो कह लें, पर मुझे तो क्योंतो 'स्वच्छ' दखिलाई देता है, और अपनी पुरानी काशी स्वच्छ ही नहीं, स्फूर्त भी! और यह गांव भी क्योंतो जतिना ही स्वच्छ है□

ऐसा इसलि□ कि यहां मनुष्य ही नहीं, हर वस्तु ठीक-ठकिाने पर है□ घरों की दो पट्टयिों के □ कसरि पर जालयिों से घरिा हुआ घूरा है, जसि पर हफ्ते के नयित दनि, नयित रंग की थैली में नयित कस्मि का कू□ा रखा जाता है- नयित समय पर गा□ी कू□ा उठा ले जाती है□ हर परविार की पारी बंधी है, □ कमाह घूरे को धोकर साफ रखने की□ वैसे ही हर मनुष्य का स्थान और काम भी नयित है□ थो□ी समझ आ जाने के बाद बच्चा भी जानता है कि घर में भोजन की चौकी पर बैठने का उसका स्थान कहां है, व्यंजन परसे जाने पर उसकी बारी कब आ□ गी□ किसे माफी कराना चाहि□, और किसे माफ करना, यह भी पूर्व नशि्चति है□

डाकटकिट लफिाफे के ऊपरी दा□ं कोने पर लगाना है□ दूध के डब्बिे पर जहां नशिान बना है, डब्बिा वहीं से खोला जाता है□ ऊंची इमारत से कूदकर आत्महत्या करने वाले भी जूता हो या सैंडलि, उन्हें जो□ा बनाकर छो□ जाते है□ बुलेट ट्रेन नयित समय से 10 सेकेंड देरी कर स्टेशन पर पहुंचे तो उसके ड्राइवर पर क्या बीतेगी, कभी पता करें□ स□क कनिारे सगिरेट के बुझे हु□ टोटे नहीं दखिाई देते क्योंकि कोई फेंकता नहीं, इस डर से कि कोई दूसरा व्यक्ति उसका चेहरा देखेगा- 'चेहरा दखि जाना' नक्कू बनना है□ □ कजापानी के लि□ जीवन प्राण है, 'चेहरा'!

सारा जापान कैसे और कितने समय में यों स्मार्ट बना होगा, भला! यह अनुशासन हुआ है, पछिले चार-पांच सौ साल लंबी सख्त तानाशाही शासन के तले रहते हु□! सन् 1868 से पहले आम जापानी का नाम ही होता था, मोदी, अबे या मालवीय जैसे उपनाम से रहति! जापान में 'मैं' कहीं है ही नहीं, सर्वत्र 'हम' है- 'हमारा देश', 'हमारी जापानी भाषा'□

इसे थो□ा विस्तार से इसलि□ लिखा कि हम भारतवासियों का 'जैसी प□ी सो सहि रहे' का स्वभाव इतना बद्धमूल है कि किसी दूसरे के लि□ निजि हति का त्याग करना तो बहुत दूर, वह अपने ही हति के लि□ भी हाथ-पांव नहीं डुलाना चाहता! जापानवासियों ने जो भी हासलि किया है, वह बहुत सारे स्वार्थों का बलदिान कर!

हम भारतीयों का मस्तष्कि तो भरा है शब्दों से, उससे हम मनन, चिंतन और तर्क करते हैं- □क□ क शब्द के दर्जनों पर्याय हैं- हम □ क ही अक्षर में मात्रा□ लगाकर उसे दस गुना कर लेते हैं□ जापानी भाषा में मात्रा तो दूर, अक्षर भी गनिती के हैं! हमारे वर्गीय बारह अक्षरों 'क' से 'क' आदि की जगह केवल पांच□ पर्यायवाची शब्द तो सूर्य और जल के भी नहीं! जापान में 'वाक्प्टु' को लबार झूठा और दगाबाज माना जाता है□ इस देश में बहस तो दूर, बोलने तक की जरूरत कम ही प□ती है! व्यक्ति जिस स्थान पर नयिुक्त है, वहां वह अपना कर्तव्य पूरा कर रहा है- इस प्रकार सारा जापान □ क विशाल यंत्र के समान है, जसिका हर पुर्जा ठीक से काम कर रहा है□ जापानी लोग भाषा के सहारे विचार न कर, अपनी कलाई के आगे की हथेलियों और उंगलियों से 'कर्म' करते है, भूलें करके भी उससे सीखते हैं□ फरि फरि कर्म करने की प्रक्रिया में कर्म और कर्ता मलिकर □ क हो जाते है! वह चाहे सामुराई की तलवार बनाने वाला लोहार हो या डे□ हजार वर्ष अडगि ख□े रहने वाले पंचखंडा मंदरि शखिर का नर्मिाता सद्धिहस्त ब□ई- लोहार पृथक नहीं रहा, वह तलवार में है□ ऐसे ही ब□ई भी□ जापानी जन के जीवन में यही है □ न (ध्यान)!

जसि देश के केवल □ क पांचवें हसि्से पर सारी आबादी बसती हो, जहां कोई भी खनजि पदार्थ न हो, जहां आ□ दनि भूकंप से धरती डोलती हो, ज्वालामुखी का वसि्फोट, भुरभुरे पर्वत तूफानी बारशि में ढह-ढह प□ते हों, वहां सदा चौकन्नी रहने वाली व्यवस्था कायम न रखी जा□ तो आदमी जा□ तो कैसे?

हमारी और जापानयिों की बनावट कितनी जुदा-जुदा है! शब्दों में जीने वाले हम, इससे शब्द जब अपनी पहचान खो देते हैं तो शवि शव हो जाता है□ काशी में यही हुआ है और अन्यत्र भी□ इससे कू□ा नजर के सामने होने पर भी नजर में नहीं आता! हमारे देश का हंदिी भाषी भाग ही मदुराई, गोवा और केरल की तुलना में इतना अधकि गंदा क्यों है!

भगवान् शेष के अवतार पतंजलि ने इसी से 'शब्द' को इहलोक-परलोक की कामना□ पूरी करने वाला कहा है-

□ कः शब्दः सम्यक् ज्ञातः संप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग् भवति

मैं पछिली बार काशी गया था, तीस वर्ष से ऊपर होते है, सन् 81 में□ मेरी दो बुआ□ वहां ब्याही गई थीं□ गुदौलया मशि्रों के मुहल्ले में □ क सज्जन से मलिने गया□ हम बातें कर रहे थे कि बीच में बजिली चली गई□ लालटेन थी□ लौटने को हुआ तो लालटेन लेकर वे साथ चले□ घूरे का ढेर और गोबर से बचने को लालटेन दखिाते, चौ□ा स□ क तक□

अगले दिन जल्दी उठकर बनारस का सूर्योदय देखने के पैदल गंगा तट तक गया। मणिकर्णिका घाट। जलती हुई चिताओं की चिरायंध गंध। गोल चरणपादुका को देर तक देखता रहा। नवंबर सन् 46 में यहां आया था, पितामह की पार्थिव देह इसी चरणपादुका पर अग्नि संस्कार पाकर पंचतत्त्वों में लीन हुई थी! तब तो गंगा में बहते या घाट किनारे लगे स-गले शव दिखलाई न दि थे। अब सुनते हैं, विदेशी सैलानी ऐसे शवों के वीडिओ उतारकर यू-ट्यूब पर दिखाते हैं! काशी पहले की सी स्वच्छ हो जा तो हार्दिक मनोकामना है, क बार फिर किशोर वय वाली अपनी काशी का दर्शन करने की!

मेरा अब तक का सारा जीवन हिंदी साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में बीता है। अब अस्सी वर्ष की वय में आकर मन किसी दूसरी ओर नहीं जाता। आप हिंदी के समर्थक हैं, यह जानते हु। आपसे क अनुरोध दूर क्षितिज में रहते हु कर रहा हूं।

क कांग्रेसी नेता ने प्रदर्शनी लगाने के इरादे से नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, के पुस्तकालय की अलमारियां खाली कराने के लि हजारों हस्तलिखित पोथियां और पुस्तकें बोरों में भरवा दी थीं! प्रदर्शनी तो हो गई, बोरों में बंद अमूल्य हस्तलेख बीस-पच्चीस वर्ष बाद अब भी बोरा बंद फर्श पर प है! इससे बि लज्जाजनक बात और क्या होगी कि जो संस्था हिंदी की उन्नति के लि स्थापित हुई थी, वह हिंदी के अति दुर्लभ ज्ञान भंडार की कब्रगाह हो गई!

आपसे साग्रह अनुरोध करता हूं, दीमकों का आहार बनने से जो भी हस्तलेख बच रहे हों उन्हें वहां से कैसे भी क्यों न हो, निकलवा कर सुरक्षित स्थान पर भिजवा दें। नहीं तो काशी पर वाग्देवी सरस्वती का शाप लगा रहेगा।

काशी का बांकपन प्रसिद्ध है। आपने जो बी। उठाया है, वह भी कम टे। नहीं। आप चिर युवा बने रहें, उद्यम में कभी न थकें, यह मेरी हार्दिक शुभकामना है।

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लि क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta